5 फरवरी 2023
मूल्य : 5.00 रुपये

मालवा-निमाड़

जाग्रत मालवा

पंजीयन क्रमांक : MPHIN/2021/82532
मासिक जागरण पत्रिका

मालवा की शैव परंपरा

सम्पूर्ण मालवा-निमाड़ में शैव परम्परा है। श्री महाकालेश्वर और श्री ओंकारेश्वर ज्योतिर्लिंग भी यहीं हैं। चौरासी महादेव समेत अनेकों प्राचीन महत्व के शिव मंदिर मालवा में है।

75 Azadi Ka Amrit Mahotsav

SHAKTI® PUMPING LIFE

सूर्य ही नई शक्ति

शक्ति सोलर होम लाईट एंड चार्जिंग सिस्टम

सौर ऊर्जा का उपयोग एवं अपार फ़ायदों को सभी जानते है, और इसलिये हर जगह एवं हर क्षेत्र में इसका अस्तित्व दिखने लगा है. अब सौर ऊर्जा का उपयोग उद्योगों के साथ साथ घरेलु बिजली के उपयोग में भी होने लगा है.

शक्ति पत्म्पस् ने शक्ति सोलर होम लाईट एंड चार्जिंग सिस्टम को विकसित किया है.

MRP 29500/-

शक्ति सोलर होम लाईट एंड चार्जिंग सिस्टम

- 150 वॉट का एक सोलर पेनल
- लिथीयम एंड फास्फेट (LFP) बैटरी 60 Ah
- MPPT चार्ज कंट्रोलर 20 A
- डीसी सिलिंग फैन
- 02 व्हाईट एलईडी बल्ब 6 वॉट

विशेषताएं

शक्ति सोलर होम लाईट एंड चार्जिंग सिस्टम में एक बार का निवेश जो आपको साल-दर-साल फायदा पहुंचाएं.

- बिजली के बिल में कमी
- लम्बे समय तक चले
- भरोसेमंद एवं बाधा रहित परफॉर्मेंस
- रख-रखाव एवं चलाना आसान
- पर्यावरण-अनुकूल
- प्रचुर मात्रा में उपलब्धता
- परंपरागत ऊर्जा के स्त्रोतों पर निर्भरता से मुक्त
- सरल संचालन
- लिथियम बैटरी की लाईफ अन्य सामान्य बैटरी की तुलना में अधिक है एवं यह बहुत जल्दी चार्ज होती है.

सोलर कंट्रोलर की विशेषताएं

HIGH PERFORMANCE CHIP
MULTIPLE PROTECTION
AUTOMATIC RECOGNITION
LIGHT EFFICIENCY TIME CONTROL
PWN CHARGE
SIMPLE INSTALLATION

कार्यप्रणाली

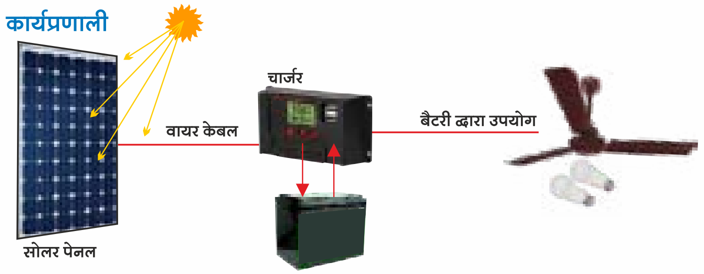

India : Toll Free No. 1800 103 5555

शक्ति पम्पस् (इंडिया) लिमिटेड

सेक्टर - 3, औद्योगिक क्षेत्र, पीथमपुर, जिला-धार (म.प्र.) - इंडिया फोन.: +91-7292-410500
ई-मेल: info@shaktipumps.com, वेब: www.shaktipumps.com. टोल फ्री नं.: 1800 103 5555

* नियम व शर्तें लागू

जाग्रत मालवा
इन्दौर दिनांक 5 फरवरी 2023 मासिक जागरण पत्रिका

मासिक जागरण पत्रिका
शीर्षक (टाईटल) पंजीयन MPHIN/2021/82532
वर्ष : 02 अंक : 08

फाल्गुन / कृष्ण
युगाब्द ५१२४

प्रधान संपादक
देवकृष्ण व्यास
संपादक
अरुण सपकाले
संपादक मंडल
डॉ. सुब्रतो गुहा
डॉ. सोनाली नरगुन्दे
डॉ. रत्नदीप निगम
डॉ. उत्तम मीणा
अशोक वर्मा
राकेश दांगी
राजेश सोनी

मुख्य कार्यालय
जाग्रत मालवा
जी-1, केसरदीप एवेन्यू
72, नारायण बाग, इन्दौर (म.प्र.)
पिन कोड : 452007
फोन : 0731-3551341

Email :
jagratmalwa@gmail.com
jagratmalwa

स्वामी – विश्व संवाद केन्द्र के लिए प्रकाशक और मुद्रक दिनेश गुप्ता द्वारा मुद्रांकण ऑफसेट ए-11/डी पोलोग्राउंड इंदौर म.प्र. से मुद्रित एवं 72, नारायण बाग, जी-1, केसरदीप एवेन्यु इन्दौर म.प्र. से प्रकाशित। संपादक अरुण सपकाले फोन नं. 0731-3551341

अपनी बात

ॐ

आकाशे तारकं लिगं, पाताले हाटकेश्वरम्।
भूलोके च महाकालो लिंगत्रय नमोस्तुते।।

शैव परंपरा हिन्दू धर्म का अभिन्न अंग है और हिन्दू धर्म का आधार वेद और पुराण हैं। पुराणों के अनुसार मालवा क्षेत्र में शैव परंपरा बहुत प्राचीन हैं।

महाकाल और मालवा के संबंध क्षेत्र में हमारे पुराणों में एक अद्भुत प्रसंग मिलता है। श्रीराम शिवजी की भक्ति करते थे और सत्य है कि भगवान राम 'सदाशिव अर्थात् महाकाल या काल के भगवान याने प्रकृति की पूजा करते थे। सनातन धर्म में तीन देव प्रमुख माने जाते हैं- ब्रह्मा, विष्णु और महेश अर्थात् शिव। भगवान विष्णु दशावतारी हैं लेकिन शिव 108 नामधारी चौबीस अवतारी और उन्नीस रूद्र अवतारी हैं। सर्वप्रथम शिव ने ही धरती पर जीव जगत का निर्धारण व प्रसार किया इसलिए शिव को आदिदेव भी कहा है। शिव अविनाशी और अजन्मा हैं शिव का ना आदि ना अंत, जब कुछ नहीं था तब भी शिव थे और जब कुछ नहीं रहेगा तब भी शिव रहेंगे।

भारत के भूगर्भिक इतिहास के हिसाब से मालवा का पठार सबसे प्राचीन भू-भाग है। 730 ईसा पूर्व मालवा पर लगभग 547 वर्षों तक भील राजाओं ने शासन किया और ये प्रकृति पूजक थे और प्रकृति का दूसरा नाम ही भगवान शिव है। इस हिसाब से मालवा में शिव पूजा की परंपरा बहुत पुरानी है।

मालवा में वर्तमान के अनुसार उज्जैन का महाकालेश्वर मंदिर, निमाड़ में ओंकारेश्वर मंदिर, आगर जिले का बैजनाथ महादेव, महेश्वर का रावणेश्वर, तराना का तिलकेश्वर मंदिर, देवास का बिलावली मंदिर, रतलाम का विरूपाक्ष महादेव, झाबुआ का नर्मदेश्वर महादेव, पेटलावद का नीलकंठेश्वर, बदनावर का उड़निया मंदिर, नर्मदा संगम का शूण प्राणीश्वर महादेव मंदिर, नीमच का कपिलेश्वर मंदिर, महिदपुर के श्री धूर्जटेश्वर महादेव, डंगवाड़ा (बड़नगर) का बारेश्वर महादेव और मंदसौर का पशुपतिनाथ मंदिर, बागली का जयशंकर मंदिर आदि बहुत प्रसिद्ध हैं। इस तरण मालव भूमि का कण-कण शिवमय है।

मालवा के नगर-नगर और डगर-डगर में महादेव विराजित हैं। मालवा की सीमा रेखा माँ रेवा के नाभिस्थल के तट पर सिद्धनाथ और बिजवाड़ में विजेश्वर महादेव। इस प्रकार मालवा और निमाड़ के अनेक स्थानों पर प्राचीन शिव मंदिर स्थापित हैं।

मालवा निमाड़ का कोई क्षेत्र खाली नहीं है जहां भगवान शिव का कोई प्राचीन स्थान ना हो। समस्त महादेव के चरणों में बारंबार प्रणाम ।

मालवा में शैव परंपरा

डॉ बालाराम परमार 'हंसमुख'

मालवा में शैव परंपरा को जानने, पहचानने और समझने के लिए हमें पौराणिक रहस्यों के अनुशीलन की आवश्यकता है। क्योंकि शैव परंपरा हिंदू धर्म का अभिन्न अंग है और हिंदू धर्म की आधारशिला वेद और पुराण हैं। विश्व वांग्मय में वेदों और पुराणों का स्थान अप्रतिम और सर्वश्रेष्ठ है। क्योंकि लौकिक और पारलौकिक, जल- थल -नभ, जीवन और मरण से संबंधित कोई भी ऐसा प्रसंग नहीं है, जिसका भाष्य वेदों - पुराणों में नहीं हुआ हो। सार्वभौमिक एवं सनातन वेदों-पुराणों में आख्यान, उपाख्यान एवं किंवदंतियों के माध्यम से हिंदू देवी - देवताओं का प्रादुर्भाव हुआ है। इसलिए वेद और पुराण हिंदू धर्म,संस्कृति और सभ्यता का भाष्य व गौरव गाथा हैं।

वेद-पुराण हिंदुओं की अक्षुण्ण एवं अभूतपूर्व निधि है। क्योंकि हिंदू धर्म में अवतारवाद और मूर्तिपूजा की अवधारणा प्रतिपादित है । ऐतिहासिक दृष्टि से भारत भू पर हिंदू धर्म जिसे सनातन धर्म के नाम से भी पुकारा जाता है, के बारे में चार युग का भाष्य प्रमाणित रुप से उपस्थित है। आदि अनादि काल अर्थात् आखेट अवस्था के बाद सतयुग 1728000 वर्ष, त्रेता युग 1296000 वर्ष, द्वापर युग 8 64000 वर्ष और कलियुग 432000 वर्ष का व्यापक वर्णन पुराणों में मिलता है।

शिव को समझना है तो भगवान विष्णु और ब्रह्मा तथा उनके अवतारों को जानना यहां प्रासंगिक है। शिव पुराण के अनुसार शिव स्वयंभू हैं, लेकिन विष्णु पुराण के अनुसार शिव को विष्णु के माथे के तेज से उत्पन्न हुआ बताया गया है। अनादि शिव ने ही अपने शरीर पर अमृत मलकर अपने शरीर और अमृत से श्रीहरि विष्णु को उत्पन्न किया तथा श्री हरि ने अपनी नाभि से ब्रह्मा जी को उत्पन्न किया। यहां यह भी जानकारी प्रासंगिक है कि सतयुग में भारत भू को 'जम्बू द्वीप' अर्थात् 'हमारी पृथ्वी' की संज्ञा से पुकारा जाता था और लोग प्रकृति की पूजा करते थे। इस युग में ज्ञान और ध्यान की प्रधानता थी। प्रजा, पुरुषार्थ सिद्धि कर अपने को कृतज्ञ समझती थी। धर्म सर्वत्र सर्वोपरि एवं अपने पूर्ण रूप में था । सतयुग की सर्वश्रेष्ठ विशेषता यह थी कि जो सत्य को नहीं मानता था अथवा सत्य को मिटा देना चाहता था, उसका समाज, राष्ट्र और धर्म में कोई स्थान नहीं होता था।

पौराणिक साक्ष्य के अनुसार सतयुग के प्रथम देवता एवं राजा भगवान रामचंद्र जी माने जाते हैं। भगवान राम, विष्णु के सातवें अवतार हैं। भगवान राम ने समस्त लोकों को मित्रता और मर्यादा में रहने का संदेश दिया, इसलिए वह मर्यादा पुरुषोत्तम राम हैं। तब प्रश्न उठता है कि भगवान मर्यादा पुरुषोत्तम श्रीराम के आराध्य देवता कौन थे ?

पुराणों और वेदों में इसका प्रसंग मिलता है कि 'भगवान राम शिवलिंग अर्थात् शिव की पूजा- आराधना करते थे। अतः भगवान शंकर मर्यादा पुरुषोत्तम भगवान राम जी के स्वामी हैं। रामेश्वर अर्थात् राम के ईश्वर। इसका एक और अर्थ व्याप्त है -राम है ईश्वर अर्थात् वह है रामेश्वर।

शिव आदिदेव हैं, आदिनाथ और आदीश हैं। 'लिंग हस्तः स्वयं रूद्रो' अर्थात् जिसके हाथ में ब्रह्मांड के भार का अवलंबन है, वह है भगवान शंकर। संस्कृत भाषा में काल का अर्थ है समय और मृत्यु। अविनाशी अर्थात् अजन्मा। शिव न आदि है और न अंत। शिव विनाशक की भूमिका निभाते हैं । जब कुछ नहीं था तब शिव थे और जब कुछ नहीं होगा तब भी शिव रहेंगे। संहारक कहे जाने वाले भगवान शिव ने देवों की रक्षा करने हेतु जहर पिया था और नीलकंठ कहलाए। शिव के साथ-साथ ब्रह्मा और विष्णु ने भी धरती पर जीवन की उत्पत्ति और पालन का कार्य किया। इस प्रकार डार्विन के विकासवाद सिद्धांत और हिमयुग सिद्धांत के अनुसार देवता, गंधर्व, यक्ष और मनुष्य का प्रादुर्भाव धरती पर होता चला गया।

इस हिसाब से मालव अर्थात् लक्ष्मी जी की निवास स्थली अर्थात् मालवा का पठार, जिसका निर्माण ज्वालामुखी के उद्गार से बना है। मालवा का पठार एक प्राचीन भूभाग है, जिसके गर्भ में ठोस लावा विद्यमान है। इसलिए मालवा का पठारी इलाका भूगर्भिक हलचलों से प्रायः मुक्त माना जाता है। इसे **मालव** नाम से भी जाना जाता है। मध्य प्रदेश के पश्चिमी भाग, राजस्थान के दक्षिणी पूर्वी भाग में गठित यह धन- धान्य और खनिज से परिपूर्ण क्षेत्र प्राचीन काल से ही एक स्वतंत्र राजनीतिक एवं भौगोलिक इकाई रहा है । ऐसी मान्यता है कि **मालव** या **मालवी** जनजाति की बहुलता के आधार पर इसका नाम मालवा पड़ा।

मालवा पर लगभग 5 सदी से ज्यादा समय तक भील राजाओं ने शासन किया, जिसमें राजा धन्ना भील प्रमुख था। उसने आसपास के कई राजाओं को चुनौती दी थी । इस प्रकार की उपस्थित कथाओं के आधार पर इस नतीजे पर पहुंचा जा सकता है कि मालवा प्रांत के प्राचीन राजा प्रकृति पूजक थे। आज भी भील आदिवासी प्रकृति प्रेमी और पूजक हैं। पौराणिक आख्यानों में यह भी निर्विवाद सिद्ध होता है कि प्रकृति का दूसरा नाम ही भगवान **शिव** है ।

इतिहास में भील जनजाति का उल्लेख सर्वप्रथम ईसा पूर्व चौथी सदी में मिलता है। यह जाति अथवा समुदाय प्रारंभ में पंजाब और राजपूताना क्षेत्र में निवास करती थी। सिकंदर से युद्ध में पराजित होकर दक्षिण की ओर पलायन कर गई और अवंति के आसपास के उपजाऊ क्षेत्रों में जीवन यापन करने लगी। यह जातीय समूह पंजाब के मालवा नामक स्थान से यहां आया । इसका प्रमाण यह है कि आज भी पंजाब का एक सूबा मालवा के नाम से पुकारा जाता है। पंजाब में मालवा सतलुज के दक्षिण वाले क्षेत्र को कहते हैं । इसके अंतर्गत हरियाणा और दक्षिणी- पश्चिमी राजस्थान का मरुस्थल भाग आता है। इस क्षेत्र के लोग पंजाबी की उप बोली मलवाई बोलते हैं। संस्कृत में **मालव** का अर्थ होता है, देवी लक्ष्मी के आवास का हिस्सा। मालवा का नाम नर्मदा-चंबल-क्षिप्रा-वेतवा-धसान-माही- कालीसिंध-पार्वती आदि मौजूदा नदियों वाले उपजाऊ जमीन में ऐतिहासिक, सांस्कृतिक और भौतिक क्षेत्र में बसने वाले लोगों **मालव** अथवा **मालवी** अथवा मालवीय नामक जाति के आधार पर पड़ा है, सर्वाधिक उपयुक्त प्रतीत होता है। वर्तमान में मालवा लगभग 47760 वर्ग किलोमीटर में फैला हुआ है, जिसके अंतर्गत धार, झाबुआ, रतलाम, देवास, सीहोर, राजगढ़, श्योपुर, गुना, ग्वालियर, उज्जैन, भोपाल और विदिशा आदि जिले आते हैं। जनसंख्या सर्वे के अनुसार उपरोक्त लगभग सभी जिलों में मालवीय बलाई समाज के लोगों की संख्या बहुतायत में है । यह जातीय समूह हिन्दू धर्मावलंबी है और भगवान शिव के परम भक्त हैं। शिव के अवतार भेरू और हनुमान मालवीय बलाई समाज के आराध्य देव हैं।

मालवा प्रांत के वर्तमान विस्तार में उज्जैन का महाकालेश्वर मंदिर, खण्डवा जिले का ओंकारेश्वर मंदिर, आगर जिले का बैजनाथ महादेव मंदिर, महेश्वर का रावणेश्वर मंदिर और विश्व विख्यात राजा राजेश्वर मंदिर, तराना का तिलकेश्वर मंदिर, देवास का बिलावली मंदिर, ग्वालियर का मोटेश्वर महादेव मंदिर, गुना का केदारनाथ मंदिर, सारंगपुर का पिपलेश्वर महादेव मंदिर, जाटोली का शिव मंदिर, रतलाम का विरूपाक्ष महादेव मंदिर (इसे 13 वां ज्योतिर्लिंग भी माना जाता है), झाबुआ का नर्मदेश्वर महादेव मंदिर, पेटलावद का नीलकंठेश्वर महादेव मंदिर, बदनावर का उडनिया मंदिर, सिंदुरी और नर्मदा संगम का शूलपाणीश्वर महादेव मंदिर, नीमच का किलेश्वर महादेव मंदिर, महिदपुर का श्रीधुर्जटेश्वर महादेव मंदिर, दंगवाडा (बड़नगर) का बोरेश्वर महादेव मंदिर, भोजपुर का शिव मंदिर (विश्व का सबसे बड़ा शिवलिंग), इटारसी का तिल सिंदूर मंदिर, होशंगाबाद का मोनेश्वर धाम मंदिर, सीहोर का कोटेश्वर मंदिर, आष्टा का शंकर मंदिर और मंदसौर का पशुपतिनाथ (8 मुंह) मंदिर आदि की उपस्थिति मालवा की दक्षिणी सीमा से लेकर दक्षिण में नर्मदा घाटी तथा पूर्व में विदिशा से लेकर राजपूताना की सीमा के मध्य का भूभाग जिसका प्रतिनिधित्व हिंदू समाज करता है। शिव ही शिव है। शैव ही शैव हैं।

इस प्रकार भौतिक रूप से पश्चिम में माही नदी से लेकर पूर्व में धसान नदी तक तथा उत्तर में चंबल नदी से लेकर दक्षिण में नर्मदा नदी तक मैदानी, पठारी, पर्वतीय, ऊंचा-नीचा सारा का सारा मालवा, मालवा के लोग और मालवा की माटी का कण कण शिवमय होकर मातृ शक्ति और पितृ भक्ति के माध्यम से ब्रह्मा, विष्णु और महेश का ऋण चुकाने में मग्न है। जन-जन के महादेव। नगर-नगर, डगर-डगर महादेव।। हर हर महादेव।।

ऐतिहासिक बंजारा महाकुंभ

10 लाख से अधिक लोग ऐतिहासिक कुंभ में पधारे

अमन व्यास

महाराष्ट्र के गोद्री गांव में पिछले 25 से 30 जनवरी अर्थात छः दिनों तक बंजारा कुंभ का आयोजन किया गया, जिस तरह कुंभ मेले का आयोजन होता है वैसा ही आयोजन।

10 लाख से अधिक नागरिक इसमें आए, कई साधु -संतों के आशीर्वचन हुए। इतने लोगों की व्यवस्था के लिए कई नगर बसाए गए। 24 घंटे भोजन बना। गणमान्य जनों के लिए तीन हेलीपेड भी बनाए गए। यह उस कार्यक्रम की झलक भर है ताकि आप इस कार्यक्रम के स्तर को समझ सकें।

जरूरी तो यह जानना है कि यह कार्यक्रम हुआ क्यों? क्या आवश्यकता आन पड़ी? तो आज बंजारा समाज के मध्य झूठी कहानियां गढ़कर उन्हें अहिन्दू बताने का बहुत बड़ा षड्यंत्र चल रहा है। इसी षड्यंत्र के चलते आंध्र प्रदेश, तेलंगाना, गुजरात, छतीसगढ़, मध्य प्रदेश, राजस्थान, कर्नाटक और महाराष्ट्र राज्यों में बड़ी संख्या में हिंदू गोर बंजारा, लबाना और नायकाडा समुदाय हैं और लगभग 11,591 हजार तांडे हैं, इनमें से 3678 तांडे पर ईसाईकरण हो चुका है। भारत में इस समय 18 ईसाई संगठन कार्यरत हैं और उन्हें विदेशी संगठनों से प्रत्यक्ष समर्थन मिलता है। ग्लोबल बंजारा बैपटिस्ट मिनिस्ट्रीज़ इंटरनेशनल हर बंजारा गांव में बंजारा समुदाय तक पहुँचने और उनका ईसाईकरण करने के लिए कई परियोजनाओं पर काम कर रही है।

आज बड़ी संख्या में बंजारा समाज को कन्वर्ट कर ईसाई बनाने का काम चल रहा है। तरीका वही पुराना है, आर्य-अनार्य, द्रविड़, सवर्ण, आदिवासी आदि शब्दों के भ्रमजाल फैलाकर, प्रायोजित ईसाई संगठनों ने बंजारा समाज के परिवार के परिवार ईसाई बना दिए हैं।

आज बंजारा कुंभ के माध्यम से बंजारा समाज के लाखों लोगों में 'हम हिन्दू ही हैं' इस भाव का पुनर्जागरण हुआ है। आपको ध्यान होगा निमाड़ के जनजातीय बहुल जिले झाबुआ में भी मिशनरियों ने इसी तरह का षड्यंत्र रचकर जनजातीय समाज के परिवार के परिवार कन्वर्ट कर दिए थे, चर्चों के तंत्र खड़े हुए थे। फिर झाबुआ हिन्दू संगम का आयोजन हुआ। संगम के बाद कई सामाजिक कार्यकर्ताओं ने अपना जीवन झाबुआ के लिए आहूत किया, जिससे आज झाबुआ का चित्र बदल रहा है।

बंजारा कुंभ भी उसी तरह सार्थक होगा, जब हम सब अपनी वाणी से, अपने कर्म से, अपने व्यवहार से यह पुष्ट करें कि 'तू मैं एक रक्त' फिर कोई मिशनरी अपने बंजारा समाज के किसी बन्धु - भगिनी को कन्वर्ट नहीं कर पाएगी।

बंजारा कुंभ के लिए कई सामाजिक कार्यकर्ताओं ने, संतों ने कई महीने अनथक अविरत श्रम किया है। उनका श्रम तब सार्थक होगा जब हम अपने एक भी बंजारा भाई -बहन को ईसाई न होने दें।

जनजाति योद्धा 'तिलका माँझी'

नन्द कुमार साय

प्रारंभिक जीवन व अंग्रेजी अत्याचार

❖ तिलका माँझी का जन्म 11 फरवरी, 1750 को बिहार के सुल्तानपुर के तिलकपुर गाँव में एक संथाल जनजाति परिवार में हुआ था। इनके पिता का नाम सुन्दरा मुर्मू था। अपनी साहसिकता के कारण तिलका माँझी जबरा पहाड़िया के नाम से भी जाने जाते हैं।

प्रथम संग्राम

❖ वनवासियों और अंग्रेजों के बीच हो रहे संघर्ष ने तिलका को क्रांतिकारी बनाया। एक दिन तिलका ने शनैचर (बनैचारी जोर) नाम के स्थान से अंग्रेजों के विरूद्ध संग्राम का आह्वान कर दिया।

❖ माँझी के नेतृत्व में वनवासी लोग कदम, भागलपुर, सुल्तानगंज तथा दूर-दूर तक जंगली क्षेत्रों की तरफ बढ़ रहे थे।

❖ तिलका माँझी के नेतृत्व में वनवासी लोग अंग्रेजों पर भारी पड़ने लगे तब स्थिति की गंभीरता को देखते हुए अंग्रेजों ने क्लीव लैंड नामक अधिकारी को सुपरिटेंडेंट नियुक्त कर राजमहल भेजा।

संथाल आंदोलन व क्लीव लैंड की हत्या

❖ 1781-84 के बीच योद्धा तिलका माँझी के नेतृत्व में हुए अनेक प्रकार के संग्रामों के दौरान उन्होंने अंग्रेजों को ललकारते हुए कहा था एक - 'यह भूनम धरती माता है, हमारी माता है, इस पर हम किसी को लगान नहीं देंगे।'

❖ जंगल, तराई तथा गंगा, ब्राम्ही आदि नदियों की घाटियों में तिलका माँझी अपनी छोटी सी स्वदेशी हथियारों वाली सेना लेकर अंग्रेजों के विरूद्ध लगातार संघर्ष करते हुए मुंगेर, भागलपुर, संथाल व परगना के पर्वतीय इलाकों में छिप-छिपकर लड़ाई करते रहे।

❖ राजमहल का सुपरिटेंडेंट क्लीव लैंड एवं आयर कूट की अंग्रेजी सेना के साथ वीर तिलका माँझी का कई स्थानों पर जमकर संघर्ष हुआ।

❖ 13 जनवरी, 1784 को उनका सामना क्लीव लैंड से हुआ, जिसे उन्होंने अपने तीरों से मार गिराया। क्लीव लैंड की मृत्यु का समाचार पाकर अंग्रेज सरकार में भय का वातावरण छा गया।

❖ अंग्रेजी हुकूमत ने हर हाल में तिलका को ढूंढकर फाँसी देने का निर्णय लिया।

गिरफ्तारी

❖ एक रात तिलका माँझी और उनके क्रांतिकारी साथी जब एक पारंपरिक उत्सव में नृत्य-गान कर रहे थे, तभी अचानक एक गद्दार सरदार जाउदाह ने आक्रमण कर दिया। इस अचानक हुए आक्रमण से तिलका माँझी तो बच गये, किन्तु अनेक देशभक्त वीर वीरगति को प्राप्त हुए। कुछ को बन्दी बना लिया गया।

❖ तिलका माँझी के नेतृत्व में संथाल जनजाति ने अंग्रेज सेना पर प्रत्यक्ष रूप से धावा बोल दिया। लेकिन क्लीव लैंड की जगह उन्हें वारेन हेस्टिंग से लड़ना पड़ा। उसके पास बहुत अधिक अस्त्र-शस्त्र से लैस सेना थी।

❖ तिलका माँझी के पास कम संसाधन थे और वे युद्ध के दौरान धोखे से पकड़ लिए गए।

बलिदान

❖ तिलका माँझी को गिरफ्तार करके अंग्रेज भागलपुर ले आये एवं अमानवीय व्यवहार करते हुए उन्हें 4 घोड़ों के पीछे मोटी रस्सियों से बाँधकर घसीटा गया।

❖ सन् 1785 में एक वट वृक्ष में रस्से से बांधकर तिलका माँझी को अंग्रेजों ने फाँसी दे दी।

❖ तिलका माँझी ऐसे प्रथम व्यक्ति थे, जिन्होंने भारत को गुलामी से मुक्त कराने के लिए अंग्रेजों के विरूद्ध सबसे पहले आवाज उठाई थी, जो 90 वर्ष बाद 1857 में स्वाधीनता संग्राम के रूप में पुनः फूट पड़ी थी।

❖ क्रांतिकारी तिलका माँझी की स्मृति मे भागलपुर में कचहरी के निकट, उनकी एक मूर्ति स्थापित की गयी है। उनके नाम पर विश्वविद्यालय भी है। तिलका माँझी भारत माता के अमर सपूत के रूप में सदा याद किये जाते रहेंगे।

सुयोग्य का सम्मान

गणतंत्र दिवस की पूर्व संध्या पर पद्मश्री सम्मानों की घोषणा हुई, झाबुआ के दंपति रमेश-शांति परमार को आदिवासी गुड़िया बनाने के लिए, उमरिया की जोधइया बाई को बैगा चित्रकला को जीवंत करने और जबलपुर के मुनेश्वर चन्द्र डावर को स्वास्थ्य सुविधओं के लिए पद्मश्री से सम्मानित किया जा रहा है।

चित्रकला के क्षेत्र में

मध्य प्रदेश के उमरिया जिले की निवासी जोधइया बाई बैगा को प्रसिद्ध पद्म श्री सम्मान से नवाजा जाएगा। भारत सरकार ने 74 वें गणतंत्र दिवस की पूर्व संध्या के अवसर पर इसकी सूची जारी की है। इसमें जोधइया बाई बैगा देश के उन 91 लोगों में शुमार हुई हैं, जिन्हें पद्मश्री पुरस्कार से नवाजा जाएगा। 84 वर्ष उम्र पार कर चुकीं जोधइया बाई बैगा ने विलुप्त होती बैगा चित्रकला को अपने कौशल के माध्यम से वैश्विक पहचान दिलाई है। दरअसल, 8 मार्च 2022 को महिला दिवस के अवसर पर तत्कालीन राष्ट्रपति रामनाथ कोविंद ने जोधाबाई बैगा को **नारी शक्ति सम्मान** से भी सम्मानित कर चुके हैं। जोधइया बाई विलुप्त होती बैगा चित्रकला को विश्व स्तर पर पहचान दिलाने के लिए ख्याति प्राप्त हैं। उनकी पेंटिंग की प्रदर्शनी विदेशों में भी लगती है। 2019 में उनकी पेंटिंग को इटली में शोकेस में रखा गया था।

स्वास्थ्य के क्षेत्र में

एमपी राज्य में स्वास्थ्य के क्षेत्र में जबलपुर के मुनेश्वर चंद्र डावर को यह पुरूस्कार मिला के आपको बता दें कि डावर कम शुल्क पर सस्ती सेवाएं दे रहे है। जिन्हें चिकित्सा सस्ती स्वास्थ्य सेवाओं के क्षेत्र में पद्मश्री से सम्मानित किया गया है। जिसे लेकर उनके परिवार के लोग बेहद खुश हैं। सम्मान मिलने पर मुनेश्वर चंद्र डाबर ने कहा कि इस तरह के सम्मान से काम करने का मोटीवेशन मिलता है यह सम्मान काफी ज्यादा उत्साहवर्धक है। इसके अलावा उन्होंने कहा कि 1972 से स्वास्थ्य सेवाएं देना शुरू किया था उस समय 2 रूपए फीस लेता था। 1986 से 3 रुपए बतौर फीस लिया। 25 साल की प्रैक्टिस के बाद 1997 में 5 रुपए फीस लेना शुरू किया। 2012 में फीस बढ़ाकर 10 और 2022 में फीस 20 लेना शुरू किया है। उनके इस नेक कार्य की वजह से उन्हे पद्मश्री पुरूस्कार मिला है।

कला के क्षेत्र में

कला के क्षेत्र झाबुआ के दंपती रमेश-शांति परमार को पद्मश्री पुरस्कार के लिए चुना गया है। आपको बता दें कि दोनों 30 वर्षों से आदिवासी गुड़िया बना रहे हैं। शांति बताती हैं कि जनजातीय परियोजना के तहत आदिवासी गुड़िया बनाने का प्रशिक्षण दिया जाता था इसके बाद ससुर और अन्य स्वजन के सहयोग से उन्होंने यह विधा सीखी। बाद में यही विधा परिवार की आजीविका का साधन बन गई। अपनी कला को निखारने और उसे लगातार आगे बढ़ाने में ही पति-पत्नी लगे हुए थे। इसी बीच रमेश का कहना हैं कि उन्हें

सरकारी विभागों से मोबाइल पर पद्मश्री मिलने की सूचना मिली है जिसके बाद परिवार में काफी खुशी का माहौल है।

संत रविदास को मुसलमान बनाने का प्रयास औ र उनका प्रतिकार

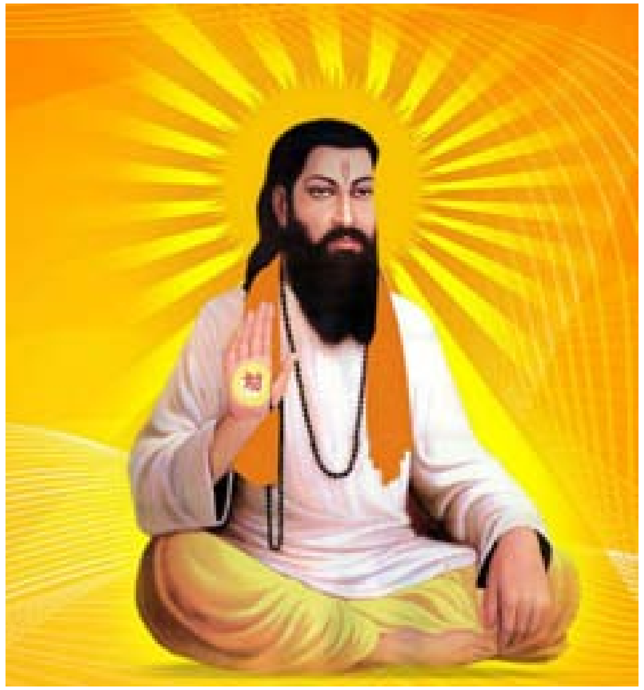

संत रविदास को मुसलमान बनाने से उनके लाखों भक्त भी मुसलमान बन जायेंगे, ऐसा सोचकर धर्मपरिवर्तन के लिए उन पर अनेक प्रकार के दबाव आये, किन्तु संत रविदास की श्रद्धा और निष्ठा को हम अटूट पाते हैं। सदना पीर इनको मुसलमान बनाने आया था। किन्तु इनकी ईश्वर-भक्ति और आध्यत्मिक-साधना से प्रभावित होकर सदना पीर हिन्दू होकर रामदास नाम से उनका शिष्य बन गया। एक ओर तो वे जातिगत भेद, ढोंग, कर्मकांड आदि के विरोध में संघर्ष करते हैं, किन्तु वैदिक धर्म के दार्शनिक पक्ष में अपनी पूर्ण आस्था बराबर रखते हैं। सिकन्दर लोदी उनको मुसलमान बनाने के लिए प्रलोभन तथा दवाब दोनों की नीति अपनाता है, लोगों को उनके पास भेजता है, किन्तु उनका उत्तर सीधा-सपाट है। वे बार -बार हिन्दू धर्म में अपनी श्रद्धा, निष्ठा तथा आस्था व्यक्त करते हैं। उनकी दृष्टि तथा सोच स्पष्ट है -

वेद वाक्य उत्तम धरम, निर्मल वाका ज्ञान।
यह सच्चा मत छोड़कर, मैं क्यों पढ़ूं कुरान।
स्त्रुति-सास्त्र-स्मृति गाई, प्राण जाय पर धरम न जाई।
कुरान बहिश्त न चाहिए, मुझको हूर हजार।
वेद धरम त्यागूं नहीं, जो गल चलै कटार।
वेद धरम है पूरण धरमा, करि कल्याण मिटावे भरमा।
सत्य सनातन वेद हैं, ज्ञान धर्म मर्याद।
जो ना जाने वेद को, वृथा करे बकवाद।

(हमारे साधु संत, भाग- 1, पृ. 22-23)

धर्मपरिवर्तन से इन्कार करने पर सिकन्दर लोदी ने संत रविदास को कठोर दण्ड देने की धमकी दी तो उन्होंने निर्भीकता के साथ उत्तर दिया -

मैं नहिं दब्बू बाल गँवारा, गंग त्याग गहूँ ताल किनारा।
प्राण तजूं पर धर्म न देऊँ, तुमसे शाह सत्य कह देऊँ।
चोटी शिखा कबहुँ नहिं त्यागौं, वस्त्र समेत देह भल त्यागौं।
कंठ कृपाण का करौ प्रहारा, चाहें डुबावो सिन्धु मंझारा॥
(वही, पृ. 23)

जाग्रत मालवा अब सोशल मीडिया पर भी

जाग्रत मालवा से वेबसाइट फेसबुक, ट्विटर, इंस्टाग्राम व यूट्यूब पर जुड़कर देशभर के विशेषकर मालवा के समाचार प्राप्त कर सकते हैं।

अभी फॉलो करें - किसी भी प्लेटफॉर्म पर जाकर जाग्रत मालवा सर्च करें

मां के आचरण से ही बच्चों में आते हैं संस्कार

जब मैं छोटा था, तो मेरी मां एक प्रौढ़ सब्ज़ीवाली से हमेशा घर के लिए सब्जियां लिया करती थीं, जो लगभग रोज ही हमारे घर एक बड़े टोकरे में ढेर सारी सब्जियां लेकर आया करती थी।

इस रविवार को वह पालक के बंडल भी लेकर आयी, और दरवाज़े पर बैठ गई।

मां को पालक बहुत पसंद थी, और मुझे भी।

मां ने पालक के दो चार बंडल हाथ में लेकर सब्ज़ीवाली से पूछा - पालक कैसे दी? सस्ता है दीदी, पांच रुपया बंडल। सब्ज़ीवाली ने कहा...माँ ने कहा ठीक है, पांच रुपये में चार बंडल दे दे।

इसके बाद कुछ देर तक दोनों अपने-अपने ऑफर पर झिकझिक खिटपिट करते रहे। सब्ज़ीवाली कुछ नाराज़गी जताते हुए बोली- इतनी तो मेरी खरीदी भी नहीं है, दीदी।

और फिर उसने एक झटके के साथ टोकरा उठाया, अपने सर पर लादा, और उठ कर जाने लगी।

लेकिन चार कदम आगे बढ़ने के साथ ही पीछे मुड़ी और चिल्लायी, चलो दो बंडल के 5 रु दे देना दीदी, आप से ज़्यादा क्या कमाऊंगी? मेरी माँ ने अपना सिर नहीं में हिलाया।

5 रु में 4 बंडल मैं बिल्कुल ठीक बोल रही हूं, क्योंकि तू हमेशा की पुरानी सब्जीवाली है। चल अब दे भी दे। परंतु सब्जीवाली रुकी नहीं, आगे बढ़ गई।

वे दोनों एक-दूसरे की रणनीतियों को भली-भांति जानते थे। यह तो खरीदने वालों और बेचने वालों के बीच रोज ही हुआ करता था। हर घर में हुआ करता था।

8-10 कदम जाकर सब्ज़ीवाली मुड़ी और हमारे दरवाजे पर वापस आई। माँ दरवाजे पर ही इंतज़ार कर रही थी। उसके चेहरे पर एक अदृश्य-सी मुस्कान थी।

सब्ज़ीवाली अपना टोकरा सामने रख कर कुछ ऐसे निढाल-सी बैठ गयी। मेरी माँ ने अपने दाहिने हाथ से प्रत्येक बंडल को टोकरे से निकाल-निकाल कर कर दूसरे हाथ की खुली हथेली पर हल्के से मारा और इस तरह पीढ़ी दर पीढ़ी के सीखे हुए मात्रात्मक, गुणात्मक और आलोचनात्मक मानदंडों से प्रत्येक बंडल की जाँच की। फिर सब्ज़ीवाली के टोकरे में रखे हुए सभी बंडलों की प्रारंभिक जांच से, मां ने अंततः अपनी संतुष्टि से चार बंडलों का चयन किया।

थकी हुई निढाल बैठी सब्जी वाली ने पालक के बाकी बंडलों को फिर से अपने टोकरे में सजाया। छोटे मूल्यवर्ग के सिक्कों में भुगतान लेकर बिना गिने ही पैसे अपने बटुए में डाल लिए। सब्जीवाली ने बैठे ही बैठे टोकरा अपने सर पर रखा और उठने लगी, लेकिन टोकरा सिर पर रखकर जैसे ही वह उठने लगी, वह उठ न सकी और धप से नीचे बैठ गई। मेरी माँ ने उसका हाथ थाम लिया और पूछा- क्या हुआ? चक्कर आ गया क्या? क्या सुबह कुछ नहीं खाया था?

सब्जीवाली ने कहा, नहीं दीदी। आटा कल खत्म हो गया था। आज की कमाई से ही, मुझे कुछ आटा खरीदना है।

मेरी माँ ने उसे बैठने के लिए कहा। फिर फुर्ती से अंदर चली गई। रोटी व सब्ज़ी के साथ तेजी से वापस आई, और सब्ज़ीवाली को दी। एक गिलास में पानी उसके सामने रखा। और सब्जीवाली से कहा धीरे-धीरे खाना, मैं तेरे लिए चाय बना रही हूं। सब्जीवाली भूखी थी। उसने कृतज्ञतापूर्वक रोटी खायी, पानी पिया और चाय समाप्त की।

मेरी माँ को बार-बार दुआएं देने लगी। मां ने टोकरा उनके सिर पर रखने में उसकी सहायता की। फिर वह सब्ज़ीवाली चली गई।

मैं हैरान था। मैंने अपनी माँ से कहा,

मां, आप ने पांच रुपये की पालक की भाजी के लिए मोलभाव करने में इतनी कठोरता दिखाई, लेकिन उस सब्जीवाली को इतने अधिक मूल्य का भोजन देने में कई गुना अधिक उदार बन गयीं। यह मेरे समझ में नहीं आया !

मेरी माँ मुस्कुराई और बोली, मेरे प्यारे बच्चे, सब्जी भाजी हमारी रोज की जरूरत है। हम हर बार ज्यादा पैसे नहीं दे सकते हैं तो उसमें मोलभाव जरूरी है। लेकिन भूखे को भोजन देना हमारी संस्कृति है, हमारे संस्कार हैं, हमें किसी भी परिस्थिति में उसे पूरा करना ही चाहिए। - सोशल मीडिया से साभार

चलो, खोज निकालें...!

वैज्ञानिक अविष्कार से जुड़े कुछ प्रश्न पूछे गए हैं। उनके उत्तर चौखाने में फंसे हैं। उन्हें ढूंढिए-

1. विद्युत बैटरी के खोजकर्ता कौन हैं?
2. ग्राहम बेल ने कौन से महत्वपूर्ण उपकरण की खोज की?
3. स्टीम इंजन का खोजकर्ता कौन है?
4. पहली प्रिंटिंग प्रेस कौन से देश में शुरू हुई थी?
5. खगोलशास्त्री गैलीलियो किस देश के हैं?
6. वनस्पति विज्ञान में कई महत्वपूर्ण खोज करने वाले भारत के पहले वैज्ञानिक शोधकर्ता का नाम क्या है?
7. गैब्रियल फॉरेनहाइट ने कौन से महत्वपूर्ण उपकरण की खोज की?

इं	ग्लैं	ड	ह	फ्रां	ज	मा	फि	ज
टे	चा	व	म	स	र्म	र	फा	ग
ली	ल	हौ	जी	क्ल	नी	य	का	दि
फो	रू	डो	ल्फ	डी	ज	ल	अ	श
न	प्र	जे	रू	णी	चा	त	जें	चं
मा	मी	म्स	इ	ट	ली	जी	टी	द्र
क	त	वा	दे	व	पा	क	ना	ब
दू	उ	ट	थ	र्मा	मी	ट	र	सु
अ	ले	सें	ड्रो	वो	ल्टा	बे	स	कृ

उत्तर - 1. एलेसेंड्रो वोल्टा 2. टेलीफोन 3. जेम्स वॉट 4. जर्मनी 5. इटली
6. जगदीशचंद्र बसु 7. थर्मामीटर

कौन है वो

गोलू बंदर ने कुछ विशेषताएं बताई हैं। उनके आधार पर पहचानिए कि वो कौन सा प्राणी है?

उत्तर - शुतुरमुर्ग

'माई नरबदा हम थारा कंकर'

ललित कर्मा 'डिसुर'

माई नरबदा हम थारा कंकर,
घिसइ-घिसइ नऽ बणी गया संकर।

भाग हुया जो वइ नऽ आया,
नइँ तो बठ्या था हम खुनसाया,
पाप कट्या आनऽ पूजणऽ धराया,
दगड़ा सी अवँऽ देव कवाया,
कुचता रयता नइँ तो ढोर-डंगर
माई नरबदा हम थारा कंकर।1।

हमरा माथ पऽ पड़्या थारा पगल्या,
तरी गया हम जसी तरी अहल्या,
थारी किरपा सी हिय भरी आयो,
मन का मन मऽ खोब हरकायो,
अवँऽ तो जपी रह्या थाराज मंतर,
माई नरबदा हम थारा कंकर।2।

अड़ऽ-धड़ऽ गड़ी गया धरम का झंडा,
पूजा करी रह्या नाना-मोठा पंडा,
तीरथ करनऽ घाट पऽ आवऽ,
लोग थारी जय-जयकार लगावऽ,
पाछऽ थारा बण्या हमरा भी मंदर
माई नरबदा हम थारा कंकर।3।

माई नरबदा हम थारा कंकर,
घिसइ-घिसइ नऽ बणी गया संकर।

मार्च माह के कृषि कार्य

गिरधर सिंह सिसोदिया

मार्च माह में देश में ठंड का प्रकोप खत्म हो चुका होता है तथा तापमान में वृद्धि होना प्रारंभ हो गई है। इस माह में अनेक शीतकालीन फसलों जैसे गेहूँ, जौ, चना, मसूर इत्यादि में दुग्धावस्था या दानों का विकास हो रहा होता है। इस अवस्था पर दानों के विकास में किसी भी उत्पादन कारक विशेष रूप से नमी प्रभाव पड़ने की अधिक संभावना रहती है। इस माह में रबी की फसलों को रोग व कीटों से सुरक्षित रखना भी आवश्यक होता है। इस माह में बसंतकालीन गन्ने की बुवाई का कार्य भी जारी रहता है। चारे वाली फसल, बरसीम से अच्छे बीजोत्पादन के लिए अभी से कटाई बंद कर देनी चाहिए। इसके साथ ही ग्रीष्मकालीन मूंग एवं चारे की फसलों की बुवाई भी की जा सकती है। साथ ही सब्जियों एवं उद्यान फसलों में बुआई, सिंचाई तथा खरपतवार प्रबंधन का कार्य भी किया जा सकता है। अतः प्रस्तुत लेख में उपरोक्त विषयों पर विस्तार से चर्चा की जा रही है।

गेहूँ और जौ - गेहूँ और जौ की फसल में यदि नमी की कमी दिखाई दे तो सिंचाई अवश्य कर देनी चाहिए। सिंचाई उस दिन नहीं करनी चाहिए जिस समय हवा की गति तेज हो अन्यथा फसल के गिरने की संभावना अधिक रहती है। मौसम को ध्यान में रखते हुए किसान भाइयों को सलाह दी जाती है कि गेहूँ में पीला रतुआ रोग की निरंतर निगरानी करते रहें। तापमान बढ़ने से मार्च माह में पत्तियों पर पीली धारिया काले रंग में बदल जाती हैं। रोग के लक्षण दिखाई देने पर प्रोपिकोनजोल 25 ई. सी/0.1 प्रतिशत का छिडकाव करें। रोग के प्रकोप तथा फैलाव को देखते हुए दूसरा छिड़काव 15-20 दिन में अंतराल पर करें। यह चूर्णिल आसिता तथा करनाल बंट से भी फसल को बचाता है। इसके अतिरिक्त यदि गेहूँ के खेत में काले रंग के पुष्पक्रम दिखाई दें तो उन्हे ध्यानपूर्वक तोड़कर जमीन में दबा दें।

चना, मटर एवं मसूर - इस समय चने की फसल में फली में दाने भर जाते है तथा फसल में फली छेदक कीट का प्रकोप हो सकता है। इसके रासायनिक नियंत्रण के लिए मोनाक्रोटोफॉस 40 ई.सी. एक लीटर को 500-600 लीटर पानी में घोलकर फली आने के समय फसल पर छिड़काव कर देना चाहिए। यदि प्रकोप अधिक हैं तो एक सप्ताह बाद दूसरा छिड़काव करना चाहिए। फली छेदक कीट मसूर की फलियों में भी छेद करके दानों को नष्ट कर देता है। इसकी रोकथाम के लिए फेनवलारेट नामक रसायन की 750 मि.ली. मात्रा या मोनोक्रोटोफास की एक लीटर मात्रा को 500-600 लीटर पानी में घोलकर छिड़क देना चाहिए। मटर की फसल में एक हल्की सिंचाई दाना भरते समय करनी चाहिए। इसके अलावा इस माह में पाउडरी मिलड्यू रोग के लगने की भी संभावना रहती है। पाउडरी मिल्ड्यू रोग के लक्षण पत्तियों, कलियों, टहनियों व फूलों पर सफेद पाऊडर के रूप में दिखाई देते हैं। पत्तियों की दोनों सतह पर सफेद रंग के छोटे-छोटे धब्बों के रूप में उत्पन्न होते हैं व धीरे-धीरे फैलकर पत्ती की सारी सतह पर फैल जाते है। रोगी पत्तियां सख्त होकर मुड़ जाती है। इसके नियंत्रण के लिए बीज को उपचारित करके बोया जाना चाहिए तथा इस समय गंधक (सल्फर) की 20-25 किग्रा. मात्रा का प्रति हैक्टेयर की दर से भुरकाव करना अत्याधिक लाभकारी सिद्ध होता है।

आलू - हमारे देश के उत्तरी भागों में आलू की इस माह खुदाई जारी रहती है। खुदाई करने से लगभग दो सप्ताह पूर्व संपूर्ण पौधों के ऊपरी भाग को काट देना चाहिए। उसके बाद आलू को जमीन के अन्दर ही पड़े रहने दें। इस प्रक्रिया को अपनाने से आलू का छिलका सख्त हो जाता है, जिससे भंडारण करने पर सड़ने की संभावना कम हो जाती है। 15 दिन बाद खुदाई करके साफ-सुथरे कन्दों का चयन करें और नई बोरियों में भरकर भण्डारण के लिये शीतगृहों में भेज दें या बाजार में भेजकर बेचा जा सकता है।

बसंत ऋतु के विशेष प्रयोग

- 2 से 3 ग्राम हरड चूर्ण में समभाग मिलाकर सुबह खाली पेट लेने से रसायन के लाभ प्राप्त होते हैं।
- 15 से 20 नीम के पत्ते तथा 2-3 काली मिर्च 15-20 दिन चबाकर खाने से वर्षभर चर्मरोग, ज्वर, रक्तविकार आदि रोगों से रक्षा होती है।
- अदरक के छोटे-छोटे टुकड़े कर उसमें नींबू का रस और थोडा नमक मिला के सेवन करने से मंदाग्नि दूर होती है।
- 5 ग्राम रात को भिगोयी हुई मेथी सुबह चबाकर पानी पीने से पेट की गैस दूर होती है।
- रीठे का छिलका पानी में पीसकर 2-2 बूँद नाक में टपकाने से आधासीसी (सिर) का दर्द दूर होता है।
- 10 ग्राम घी में 15 ग्राम गुड़ मिलाकर लेने से सूखी खाँसी में राहत मिलती है।
- 10 ग्राम शहद, 2 ग्राम सोंठ व 1 ग्राम काली मिर्च का चूर्ण मिलाकर सुबह-शाम चाटने से बलगमी खाँसी दूर होती है।

सावधानी: मुँह में कफ आने पर उसे तुरंत बाहर निकाल दें। कफ की तकलीफ में अंग्रेजी दवाइयाँ लेने से कफ सूख जाता है, जो भविष्य में टी.बी., दमा, कैंसर जैसे गम्भीर रोग उत्पन्न कर सकता है। अत: कफ बढ़ने पर ? जकरणी जलनेति का प्रयोग करें

पेट सम्बन्धी तकलीफों में : नींबू के रस में सौंफ भिगो दें और जितना नींबू का रस, सौंफ पी ले। फिर सौंफ में थोड़ा काला नमक या संत कृपा चूर्ण मिलाकर तवे में सेंक कर रख दो। ये लेने से पेट का भारीपन, बदहजमा दूर होगा और भूख खुलकर लगेगी। कब्ज की तकलीफ भी ठीक हो जायेगी।

आयुर्वेद का खजाना (घर का वैद्य)

आंवला

किसी भी रूप में थोड़ा सा
आंवला हर रोज खाते रहे,
जीवन भर उच्च रक्तचाप
और हार्ट फेल नहीं होगा।

मेथी

मेथीदाना पीसकर रख ले।
एक चम्मच एक गिलास
पानी में उबाल कर नित्य पिए।
मीठा, नमक कुछ भी नहीं डाले।
इस से आंव नहीं बनेगी,
शुगर कंट्रोल रहेगी और
जोड़ो के दर्द नहीं होंगे
और पेट ठीक रहेगा।

छाछ

तेज और ओज बढ़ने के लिए
छाछ का निरंतर सेवन
बहुत हितकर हैं।
सुबह और दोपहर के भोजन में
नित्य छाछ का सेवन करे।
भोजन में पानी के स्थान पर
छाछ का उपयोग बहुत हितकर हैं।

सरसों तेल

सर्दियों में हल्का गर्म
सरसों तेल
और गर्मियों में ठंडा
सरसों तेल
तीन बूँद दोनों कान में
कभी कभी डालते रहे।
इससे कान स्वस्थ रहेंगे।

स्वच्छ भारत अभियान के तहत इन्दौर के “आयुष” की एक अनूठी पहल

भारत के सबसे स्वच्छ शहर इन्दौर के युवा आयुष जो कि व्यवसाय प्रबंधन संकाय से पोस्ट ग्रेजुएट हैं, हाल ही में इन्दौर स्वच्छ भारत अभियान में अपना योगदान देते हुए रि-यूजेबल डायपर का निर्माण किया जो कि, पूर्णतः इको फ्रेंडली है और बच्चे की त्वचा के लिए पूरी तरह से सुरक्षित है। इस डायपर को 300 बार उपयोग में लिया जा सकता है, यानी कि डायपर को धोकर फिर से उपयोग में लिया जा सकता है।

रियुजेबल डायपर की खासियत -

1. धुलाई में आसान
2. पर्यावरण के लिए सुरक्षित
3. स्किन फ्रेंडली फेब्रिक
4. मेड इन इन्दौर
5. रोज-रोज नया डायपर खरीदने की खर्चों से आजादी

विचार कैसे आया -

यह बात है जनवरी 2022 की, मेरा किसी व्यक्तिगत काम से सरकारी शिशु चिकित्सालय जाना हुआ था, वहां एक महिला अपने 13 माह के बच्चे को त्वचा रोग विशेषज्ञ से परामर्श लेने आई हुई थी, चूंकि वह बच्चा रेशेज की समस्या से ग्रसित था। डाक्टरी परामर्श के बाद यह बात सामने आई कि इन्फेक्शन डिस्पोजेबल (प्लास्टिक) डायपर जनित है, तब डाक्टर साहब ने उन्हें कपड़े के डायपर युज करने की सलाह दी और उसके कुछ माह बाद ही मेरे स्वयं का व्यक्तिगत अनुभव भी रहा, चूंकि मेरे स्वयं के परिवार में बच्चे थे, वैसी ही डिस्पोजेबल (प्लास्टिक) डायपर जनित इन्फेक्शन की समस्याऐं दिखी और जब हमने रियुजेबल (कपड़े के) डायपर का उपयोग करने शुरू किया तब नतीजे पूर्णतः सकारात्मक रहे।

चूंकि डिस्पोजेबल (प्लास्टिक) डायपर जनित इन्फेक्शन की समस्या 80 प्रतिशत बच्चों में आती है और डिस्पोजेबल (प्लास्टिक) डायपर का उपयोग हमारी जेब पर भी भारी पेता है। उदाहरण के तौर पर एक औसत डिस्पोजबल डायपर 8-10 रूपये में आता है और केवल एक बार ही उपयोग किया जा सकता है और रियुजेबल क्लॉथ डायपर को हम 300 बार उपयोग में ले सकते है। उस हिसाब से रियुजेबल क्लॉथ डायपर का एक बार उपयोग करने का खर्च मात्र 1-1.50 रूपये करीब रहता है।

महिलाओं को स्वावलंबी बना रहा पोपोक-

रियुजेबल क्लॉथ डायपर जितना योगदान पर्यावरण को सुरक्षित बनाने में दे रहा है, उतना ही योगदान महिला सशक्तीकरण और स्वरोजगार की दिशा में भी कार्य कर रहा है, यानी की रियुजेबल क्लॉथ डायपर का उत्पादन आसपास की ग्रामीण महिलाओं द्वारा ही किया जा रहा है।

वर्तमान में कुल 20-25 महिलाओं द्वारा इसका उत्पादन किया जा रहा है, शुरूआती दौर में सभी महिलाओं को सिलाई प्रशिक्षण दिया गया और अब वे अपनी पूरी क्षमता के साथ उत्पादन कर रहीं है जो कि हमारी कंपनी की सामाजिक जिम्मेदारी को भी दर्शाता है।

भविष्य की योजनाऐं -

जैसा कि आयुष बताते हैं वर्तमान में लोगों को जानकारी ही नही हैं कि इस तरह की भी कोई प्रोडक्ट मार्केट में उपलब्ध है। हम डिजीटल मीडिया एवं जनरल स्टोर्स एवं नजदीकी मेडिकल स्टोर्स, सुपर मार्केट्स के माध्यम से गाँव- गाँव तक इसको उपलब्ध करने का प्रयास कर रहे हैं और निश्चित ही आने वाले कुछ वर्षो में हम घर-घर तक इस प्रोडक्ट को पहुँचाऐंगे और समाज के हर वर्ग के व्यक्ति को स्वच्छ भारत के तहत पर्यावरण संरक्षण में भागीदार बनाऐंगे।

विक्रय -

वर्तमान में प्रोडक्ट के बारे में जागरूकता नहीं होने के कारण कुछ चुनिंदा स्टोर्स पर ही उपलब्ध है और आने वाले कुछ माह में ऑनलाईन मार्केट में भी उपलब्ध रहेगा। अभी रियुजेबल क्लॉथ डायपर्स की बिक्री दक्षिणी राज्यों में काफी ज्यादा है, कारण है केवल जागरूकता, वहाँ लोग पूर्णतः पर्यावरण को लेकर सजग हैं।

मालवी मिठास

1950 का दशक में हावर्ड विश्व विद्यालय का एक वैज्ञानिक कर्ट रिचट्टर ने उंदरा का उपर एक अजीबोगरीब शोध करियो।

कर्ट ने एक बरतन मे पानी भरी के ने उमे एक जिन्दा उंदरा के डालि दियो। पानी से भरिया बरतन मे गिरते ही उंदरो हड़बढ़ाने लगियो अने बरतन से निकलने की कोसिस करने लगियो। थोड़ी देर तड़पने का बाद उंदरा ने बरतन से बायर निकलने की अपणी कोसिस छोड़ी दी अने वो उना बरतन मे डूबी के ने मरी गयो। अब कर्ट ने अपणा शोध मे थोड़ो सो बदलाव करियो, उनने एक दूसरा उंदरा के पानी भरिया बरतन मे डालियो।

उंदरो बरतन से बायर आने वास्ते जोर लगाने लिगयो। जब उंदरो जोर लगानो बंद करी दे अन डूबने लगे ठीक उनी बखत कर्ड ओखे पानी का जार से बायर हेड़ी ले। उंदरा खे उनी बखत कर्ट ने बरतन से बायर निकालियो जब वो डूबने वालो थो। उंदरा के बायर निकालि के कर्ट ओखे लाड़ करे अने पिछो ओखे बरतन में डाले।

पानी का भरिया बरतन मे दुबारा डालने पे उंदरा ने बायर आणे वास्ते अपणी कोसिस जारी रखी पण पानी मे डालने का बाद उंदरा मे असा बदलाव देखने मिलिया कि कर्ट बी भोत हेरान रय गयो। कर्ट ने सोचियो कि ऊंदरो 15 से 20 मिनट ही जीने का वास्ते कोसिस करेगो। ओकी शारीरिक क्षमता कम हुइ जावेगी, वो बरतन मे डूबी के मरी जायगो पण असो नी हुओ उंदरो तेरतो रयो, अपनो जीवन बचाने वास्ते लगातार संघर्ष करतो रयो। 60 घन्टा तक उंदरो पानी का बरतन में अपना जीवन खे बचाने का वास्ते संघर्ष करतो रयो। कर्ट यो देखि के हेरान रय गयो की जो उंदरो खाली 15 मिनट में परिस्थिति का सामने हथियार डाली दे वो ही उंदरो 60 घन्टा तक कठिन परिस्थिति को सामनो करि रयो थो अने हार मानने के तैयार नी थो। कर्ट ने शोध को नतीजो बताते हुये कयो कि उंदरा के पेली बार बरतन में डालियो तब डूबने की स्थिति मे अइ गयो उना समय ओखे मोत का मुंडा से बायर निकाल लियो गयो, ओखे नवो जीवन दियो। उना समय उंदरा का दिमाक मे **‘आशा’** को संचार हुओ अने ओखे मेसुस हुओ कि एक हाथ है जो इनी परिस्थिति से ओखे निकाली सके। जब ओखे बरतन में दुबारा डालियो तो वो 60 घन्टा तक संघर्ष करतो रयो।

वजे थी वो हाथ।। वजे थी वा आशा। वजे थी वा उम्मीद!!! इका वास्ते हमेशा उम्मीद बनाये रखो संघर्ष करता रो।

सांस टूटने मत दो, मन खे हारने मत दो।

मन का हारे हार हे मन का जीते जीत।

मालवी अनुवाद - श्रीमती वंदना दुबे, इंदौर

नेपाल से आईं शालिग्राम शिलाएं विधि-विधान से श्रीराम जन्मभूमि तीर्थ क्षेत्र को सौंपीं

अयोध्या/काठमंडू नेपाल की कालीगंडकी नदी से प्राप्त दो विशाल शालिग्राम शिलाएं अयोध्या पहुंच गई। विधि विधान पूर्वक नेपाल स्थित प्राचीन मिथिला की राजधानी जनकपुर के जानकी मंदिर के महंत राम तपेश्वर दास और नेपाल के पूर्व उप प्रधानमंत्री विमलेंद्र निधि ने श्रीराम जन्मभूमि तीर्थ क्षेत्र ट्रस्ट के महासचिव चंपतराय को समर्पण पत्र के माध्यम से भेंट किया।

शिलाएं नेपाल से कारसेवकपुरम पहुंच गई है।

इससे पूर्व 51 वैदिक आचार्यों ने विधि विधान से शिलाओं का पूजन किया।

परिवार को पता नहीं बेटी PFI की 'जासूस' है : इंदौर कोर्ट ने रिमांड पर सौंपा; उससे जुड़ी महिला वकील को तलाश रही पुलिस

प्रतिबंधित संगठन पीएफ आई (पॉपुलर फ्रंट ऑफ इंडिया) की ओर से इंदौर की कोर्ट में जासूसी कर रही सोनू मंसूरी के लॉ स्टूडेंट होने का पता चला है। पूछताछ के बाद पुलिस ने उसे रविवार को कोर्ट में पेश किया। जहां से उसे 3 दिन की पुलिस रिमांड पर भेज दिया गया। उधर, इस युवती को लेकर इंटेलीजेंस की टीम भी पड़ताल में जुट गई है। युवती के परिजन का कहना है कि हमें नहीं पता सोनू इंदौर में क्या कर रही थी।

पीएफआई और पीस पार्टी को उपलब्ध कराती है फोटो-वीडियो

सोनू मंसूरी ने पुलिस को बताया कि वह सहयोगी अधिवक्ता नूरजहां खान के साथ न्यायालय में उपस्थित होती है। आवेदन लगाने का काम करती है और प्रकरण की निगरानी करती है। प्रकरण में हुई सभी बातें जैसे बहस, तथ्य आदि अपनी साथी नूरजहां खान के साथ मिलकर पीएफआई व पीस पार्टी से जुड़े लोगों को उपलब्ध करवाती है। बता दें, केंद्र सरकार ने राष्ट्र विरोधी गतिविधियों के चलते करीब 5 माह पहले पीएफआई को प्रतिबंधित किया है।

आरोपी युवती के छह भाई-बहन, इसके काम से सब अनजान

सोनू के पकड़ाने के बाद उसके परिवार के लोग कसरावद से इंदौर के एमजी रोड थाने पहुंचे थे, लेकिन पुलिस ने उन्हें सोनू से मिलाए बिना लौटा दिया। परिवार के लोग पुलिस के सामने यह बताते रहे कि उन्हें पता ही नहीं है कि सोनू मंसूरी इंदौर में क्या कर रही है। सोनू के परिवार में उसकी छह बहनें और एक भाई है। वह सबसे छोटी है। सभी कसरावद (खरगोन) में रहते हैं। सोनू के गिरफ्तार होने की सूचना मिलने पर उसका भाई शनिवार को थाने आया था। पुलिस ने यहां उससे आने की वजह पूछी तो भाई ने कहा कि हमारे परिवार में किसी को पता ही नहीं है कि सोनू यहां क्या कर रही है। सोनू इंदौर में कब से रह रही है और किन लोगों के संपर्क में है।

भोपाल का इस्लाम नगर हुआ फिर हुआ जगदीशपुर, औरंगजेब के भगोड़े सैनिक ने राजपूत राजा को रात्रिभोज पर बुलाया, हत्या कर बदला था नाम

भोपाल से 14 किलोमीटर दूर ऐतिहासिक धरोहर को समेटे है खूबसूरत गांव। 17वीं शताब्दी में बने किले को देखने यहां देश-दुनिया के लोग पहुंचते हैं। अब तक इसका नाम इस्लाम नगर था। अब यह फिर से अपने पुराने नाम जगदीशपुर से पहचाना जाएगा। केंद्र सरकार ने गांव का नाम जगदीशपुर करने की हरी झंडी दे दी है। राज्य सरकार ने भी बुधवार को नोटिफिकेशन जारी कर गांव का नाम बदलकर जगदीशपुर कर दिया है।

गांव का पुराना नाम जगदीशपुर होने पर वहां के लोगों ने जमकर जश्न मनाया। इस दौरान गांव के लोगों ने आतिशबाजी की, एक दूसरे को मिठाई खिलाई और बधाई दी। साथ ही ढोल ही नगाड़ों की थाप पर झूमते नजर आए।

मध्यप्रदेश राजपत्र
(असाधारण)
प्राधिकार से प्रकाशित

शाजापुर : आरिफ खान ने की घर वापसी, सनातन धर्म अपनाकर बने आनंद त्यागी ......

मध्यप्रदेश में शाजापुर जिले के शुजालपुर निवासी आरिफ खान ने घर वापसी की है। बुधवार को आरिफ खान ने मुंडन संस्कार के बाद भगवा वस्त्र धारण किए और स्थानीय मां राजराजेश्वरी मंदिर में विधि-विधान से पूजन कर सनातन धर्म अपना लिया। उन्होंने कहा कि सनातन धर्म और परंपराओं से प्रेरित होकर उन्होंने ऐसा किया है। अब उन्हें आनंद त्यागी के नाम से जाना जाएगा। उनका कहना था कि उन्होंने स्वेच्छा से फैसला किया है। उन पर किसी तरह का कोई दबाव नहीं है।

इस मौके पर बजरंग दल - विहिप के विभाग मंत्री राजेश जादम ने इसे घर वापसी बताते हुए कहा कि कहा कि सनातन धर्म के द्वार सबके लिए खुले हैं। हैं। शाजापुर में यह पहला मामला है। आरिफ का परिवार शुजालपुर में वर्षों से रहा रहा है। बताया गया कि गत माह आरिफ हिंदू महिला से विवाह संबंधी दस्तावेज तैयार कराने लाल घाटी स्थित कोर्ट पहुंचा था। इसकी भनक सामाजिक संगठन के कार्यकर्ताओं को लग गई थी। इसके बाद न्यायालय परिसर में हंगामा हुआ था। तब लालघाटी

थाना पुलिस महिला और आरिफ दोनों को थाने ले आई थी। यहां किसी भी तरह की शिकायत प्राप्त नहीं होने पर आरिफ को छोड़ दिया गया था, जबकि महिला को राजगढ़ जिले में नारी निकेतन केंद्र भेज दिया गया था। उस समय दोनों ने पुलिस को बताया था कि वे आपसी सहमति से दो साल से साथ रहे हैं और विवाह करना चाहते हैं। युवक के सनातन धर्म अपनाने को इससे भी जोड़ा जा रहा है।

सोनकच्छ में राजाभाऊ महाकाल के जीवन पर आधारित नाट्य का मंचन

गोवा मुक्ति आंदोलन में बलिदान हुए सोनकच्छ के राजाभाऊ महाकाल की जन्मशती के अवसर पर सोनकच्छ नगर में एक भव्य और ऐतिहासिक नाट्य कार्यक्रम **एक भूला सा सेनानी** का मंचन हुआ । डॉ सतीश देव द्वारा निर्देशित नाट्य का मंचन राजाभाऊ महाकाल जन्म शताब्दी समारोह समिति के तत्वाधान में उत्कृष्ट विद्यालय में किया गया। भारत माता की जय और वंदेमातरम् के उद्घोषों के बीच इस नाट्य को देखने आये बंधु-भगिनी भाव-विभोर हो गये। राजाभाऊ महाकाल के जीवन एवं कृतित्व का कलाकारों से जीवंत चित्रण किया , जिससे कई बार मातृशक्ति एवं बालदर्शकों सहित अन्य दर्शकों की आँखें नम हो गयीं। श्री देव द्वारा निर्देशित नाट्य में राजाभाऊ महाकाल के प्रचारक जीवन, सोनकच्छ में उनके द्वारा संघकार्य के विस्तार एवं गोवामुक्ति आंदोलन में अपना बलिदान का सजीव मंचन अद्भुत एवं अकल्पनीय था। नाट्य मंचन के साथ ही उत्कृष्ट विद्यालय में विजयस्तंभ पर अमर बलिदानी राजाभाऊ महाकाल का नाम अंकित होना, पुरे क्षेत्र के लिये गौरवशाली एवं प्रेरक क्षण सिद्ध हुआ

। कार्यक्रम में मुख्य अतिथि के रूप में अनुविभागीय अधिकारी श्री संदीप शिवा (अनुविभागीय अधिकारी सोनकच्छ) एवं राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के प्रांत प्रचार प्रमुख श्री विनय दीक्षित उपस्थित रहे। नाट्य मंचन के इस कार्यक्रम में नगर व आस पास के क्षेत्र से बड़ी संख्या में वरिष्ठजन, मातृशक्ति एवं युवाओं की उपस्थिति रही। नाट्य के सभी कलाकारों का सम्मान जिला संघचालक श्री मनोहर विश्वकर्मा, राजभाऊ महाकाल के समकालीन साथी श्री अवधूतराव मुंगी, सांसद श्री महेन्द्र सोलंकी एवं समिति के संयोजक श्री सतीश तिवारी ने किया।

नर्मदा साहित्य मंथन में हुआ जाग्रत मालवा के भोजपर्व विशेषांक का विमोचन.....

मालवा निमाड़ की सर्वाधिक प्रसारित मासिक जागरण पत्रिका जाग्रत मालवा के भोजपर्व विशेषांक का विमोचन हुआ।

भोजपर्व विशेषांक का विमोचन राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के अखिल भारतीय प्रचार प्रमुख सुनील आंबेकर जी, मध्यप्रदेश की पर्यटन एवं संस्कृति मंत्री उषा ठाकुर जी तथा संपादक मंडल ने किया।

विशेषांक में राजा भोज के साहित्य, दर्शन, निर्माण, युद्धनीति, नगर नियोजन, जल नियोजन इत्यादि विषयों से संबंधित लेख सम्मिलित हैं।

धार में सम्पन्न हुआ देश का प्रतिष्ठित साहित्योत्सव नर्मदा साहित्य मंथन का द्वितीय सोपान 'भोजपर्व'

विश्व संवाद केंद्र मालवा द्वारा आयोजित होने वाले प्रतिष्ठित साहित्योत्सव नर्मदा साहित्य मंथन का आयोजन इस वर्ष मां वाग्देवी एवं राजा भोज की नगरी धार में 22 -23 एवं 24 जनवरी को भोजपर्व के रूप में सम्पन्न हुआ।

भोजपर्व में उन्नीस वक्ताओं ने विभिन्न विषयों पर सत्रह सत्रों को संबोधित किया। दो सांस्कृतिक आयोजन हुए तथा ग्यारह पुस्तकों का विमोचन एवं बीस पुस्तकों का परिचय हुआ।

आयोजन में आए मालवा निमाड़ के सैकड़ों साहित्यकारों, रचनाधर्मियों को भारत के विषय और उन पर लेखन की प्रेरणा प्राप्त हुई।

कार्यक्रम में मुख्य रूप से राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के अखिल भारतीय प्रचार प्रमुख सुनील आंबेकर जी, सह प्रचार प्रमुख श्री नरेंद्र कुमार जी, मध्यप्रदेश की पर्यटन एवं संस्कृति मंत्री सुश्री उषा ठाकुर जी एवं उत्तराखण्ड के माननीय राज्यपाल लेफ्टिनेंट जनरल गुरमीत सिंह जी की

उपस्थिति रहीं।

भोजपर्व में जाग्रत मालवा द्वारा राजा भोज के समग्र जीवन पर आधारित विशेषांक **भोजपर्व** का विमोचन भी हुआ।

नर्मदा साहित्य मंथन "भोजपर्व" की झलकियां

ओंकारेश्वर मन्दिर

रावणेश्वर मंदिर

पशुपतिनाथ मंदिर

काशी विश्वनाथ मंदिर

मार्च माह के मुख्य व्रत, त्यौहार एवं दिवस

ता. ०७ होलिका दहन
ता. ०८ होली
ता. १२ रंग पचंमी
ता. २२ वर्ष प्रतिपदा
ता. ३० श्रीरामनवमी

बुक-पोस्ट
जाग्रत मालवा
प्रति,

स्वामी- विश्व संवाद केन्द्र के लिए प्रकाशक और मुद्रक दिनेश गुप्ता द्वारा मुद्रांकण ऑफसेट ए-11/डी, पोलोग्राउन्ड इन्दौर म.प्र. से मुद्रित एवं 72, नारायण बाग, जी-1, केसरदीप एवेन्यू इन्दौर (म.प्र.) से प्रकाशित। संपादक अरूण सपकाले फोन नं. 0731 -3551341